पंचम अध्याय

महिला लेखिकाओं की आत्मकथाओं की भाषा एवं शिल्प ।

5.1 भाषा का अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा ।

5.2 भाषा शैली (आत्मकथात्मक) ।

5.3 शिल्प का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप ।

5.4 शिल्प की दृष्टि से भाषा शैली ।

5.5 व्यंग्यात्मक भाषा ।

5.6 लाक्षणिक भाषा का प्रयोग: मुहावरों का प्रयोग ।

5.7 भाषा में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग ।

उर्दू, अंग्रेजी, तत्सम, तद्भव ।

5.8 बिम्ब योजना ।

5.9 प्रतीक योजना ।

निष्कर्ष

पंचम अध्याय

महिला लेखिकाओं की आत्मकथाओं की भाषा एवं शिल्प ।

5.1 भाषा का अर्थ, स्वरूप एवं परिभाषा -

भाषा किसे कहते हैं, इस का क्या स्वरूप है और भाषा का प्रारम्भ कैसे हुआ, यह एक जटिल एवं विवादास्पद प्रश्न है। सृष्टि के आदिम युग में मनुष्य ने जब नेत्रोन्मीलन किया होगा, तो बाह्य प्राकृतिक परिवेश के सम्पर्क में आने पर उसके मन में अनेक प्रतिक्रियाएँ एवं संवेदनाएँ जागृत हुई होंगी। अनेक अस्पष्ट तथा सामान्य अर्थ में निरर्थक ध्वनियों के माध्यम से उसने (मानव) अपनी प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने का प्रयास किय होगा। उसको भाषा नहीं कहा जा सकता। समाज संवेदनाओं और भावों को व्यक्त करने के लिए आदिम मानव ने जिन साधनों को अपनाया होगा, वे सभी साधन स्थूल रूप में भाषा कहे जा सकते हैं।

भाव शब्द के मूल में 'भू' धातु हैं जिसका अर्थ है - होना।' 'संवेदना' शब्द की 'सम्' पूर्वक 'विद्' धातु से व्युत्पन्न है। अतः अपनी भावना या संवेदना को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाले को ही 'व्यक्ति' कहा जाएगा। मानवेतर प्राणी भी अपनी संवेदनाओं को किसी भी प्रकार ध्वनियों के द्वारा प्रकट करते हैं, किन्तु सीमित तथा अविकसित होने से इसमें कोई उल्लेखनीय उन्नति नहीं होती। यही कारण है कि पशु-पक्षी आदिम युग में जैसा बोलते थे, आज भी वैसे ही बोलते है।

इसके विपरीत मनुष्य की अभिव्यक्ति में चिन्तन, मनन और कल्पना के कारण निरन्तर विकास होता रहता है। अतः चिंतन, सृजनात्मकता तथा कलात्मकता के कारण मनुष्य अभिव्यक्ति विशिष्ट होती है और मानवेतर प्राणियों की तुलना में उदात्त भी होती है। मानवेतर प्राणियों की भाषा तात्कालिक, सपाट और अभिध्यात्मक होती है, परन्तु मनुष्य की भाषा अभिधात्मकता के साथ-साथ लक्षणा व्यंजना से सम्पन्न बिम्बों, प्रतीकों एवं अलंकारों से समृद्ध होकर विचारों और भावों की विशेष संवाहिका हो जाती है। भाषा का अर्थ को समझने के लिए 'भाषा' शब्द की व्युत्पति पर विचार करना आवश्यक है। 'भाषा' शब्द संस्कृत की 'भाष' धातु से व्युत्पन्न है, जिसका सामान्य अर्थ है - 'बोलना'। मुख से बोलकर कुछ भावादि प्रकट करना स्थूल अर्थ में भाषा है। 'वाणी' तथा 'वाक्' शब्दों का भी भाषा के अर्थ में प्रयोग किया जाता है। 'वाणी' शब्द 'वण' तथा 'वाद्' शब्द संस्कृत की 'वच्' धातु के व्युत्पन्न है। वाणी का अर्थ शब्द करना है और वाक् भी बोलने के अर्थ में प्रयुक्त होता है। अंग्रेजी 'लैंग्वेज' शब्द 'लैटिन' 'लिगं् वा' के बना है, जिसका अर्थ जिह्वा है। फारसी में भाषा को 'जबान' कहते हैं, जिसका अर्थ भी जिह्वा है। अतः जिह्वा आदि वागंगों से उच्चरित सार्थक ध्वनि समूह को भाषा कहते हैं।

संस्कृत विद्वानों की परिभाषा -

महाकाव्यकार पतंजलि ने पाणिनी की 'अष्टाध्यायी' पर लिखे अपने महाभाष्य में भाषा की परिभाषा करते हुए लिखा है - ''जो वाणी में व्यक्त होती है उसे भाषा कहते हैं[398]।'' कल्पना, मनन, चिंतन आदि भाषा नहीं है ये मानसिक क्रियाएँ अव्यक्त हैं, चाहे वे भाषा के माध्यम से ही होती हैं।

भतृहरि द्वारा शब्द की व्युत्पति और ग्रहण के आधार पर भाषा को परिभाषित करने का प्रयास किया गया है। उनके अनुसार ''शब्द-व्यापार (भाषा) दो बुद्धियों के मध्य विचार आदान-प्रदान का एक माध्यम है[399]।'' हिन्दी में विद्वानों की परिभाषा -

1. डॉ. बाबू राम सक्सेना ने भाषा की परिभाषित करते हुए कहा है - ''जिन ध्वनि चिह्नों के द्वारा मनुष्य परस्पर विचार विनियम करता है उनको समष्टि रूप में भाषा कहते हैं[400]।'' इस परिभाषा में मुख्यतः तीन बातों पर बल दिया गया है। क) भाषा का संबंध मानव से है। ख) वह परस्पर विचार-विनियम का माध्यम है। ग) भाषा ध्वनि-चिह्नों की समष्टि है।

2. नलिनी मोहन सान्याल का कथन है कि - ''अपने स्वर को विविध प्रकार से संयुक्त तथा विन्यसत करने से उसके जो-जो आदर होते हैं, उनका संकेतों के

---

398 व्यक्तायां वाचि वर्णा येषां त इमे व्यक्तवाचः ''पंतजलि महाभाष्य, 1/3/48

399 'बुद्धयर्था देव बुद्धयर्थे जातेतदानि दृश्यते वाक्यपदीप, पृ0 3.3.3

400 बाबू राम सक्सेना, सामान्य भाषा विज्ञान, पृ0 5, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 2006, वि. संवत

सद्श व्यवहार कर अपनी चिंताओं को तथा मनोभावों को जिस साधन से हम प्रकाशित करते हैं, उस साधन को भाषा कहते हैं[401]।''

3. डॉ. श्याम सुन्दर दास ने भी भाषा के बारे में विचारों का आदान प्रदान ही माना है। इस विषय में कहा है कि - ''मनुष्य और मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान-प्रदान करने के लिए व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं[402]।''

4. डॉ. भोलानाथ तिवारी ने भाषा की परिभाषा इस प्रकार दी है - ''भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्थक ध्वनि-समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके[403]।''

भाषा विज्ञान के बाद संस्करण में उन्होंने अपनी भाषागत परिभाषा में कुछ संशोधन करते हुए इस प्रकार परिभाषा दी - ''भाषा उच्चारण अवयवों से उच्चरित मूलतः प्राय यादृच्छिक ध्वनि प्रतीकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा किसी भाषा समाज के लोग आपस में विचारों का आदान-प्रदान करते है[404]।'' पाश्चात्य विद्वानों से प्रभावित इस परिभाषा में कतिपय महत्त्वपूर्ण तत्त्व समाहित हैं।

(क) भाषा मानव-मुख से उच्चरित ध्वनि-प्रतीकों की व्यवस्था है।

(ख) ये ध्वनि-प्रतीक स्वेच्छा से निर्धारित होते हैं।

---

401 डॉ० नलिनी मोहन सान्याल, भाषा विज्ञान, राम नारायण लाल, इलाहाबाद, 1993, वि.सं.

402 डॉ० श्याम सुन्दर दास, भाषा विज्ञान, पृ0 20

403 डॉ० भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान, पृ0 2

404 वहीं, पृ0 5

(ग) ध्वनि प्रतीकों की व्यवस्था से विचारों का आदान-प्रदान होता है।
(घ) यह विचार-विनियम विशिष्ट भाषा समाज के लोगों के मध्य संभव है।

भाषा भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति है। जिसके अंतर्गत समाज की सभ्यता, संस्कृति का प्रतिबिम्ब परिलक्षित होता है। भाषा के द्वारा व्यक्ति अपनी बात को दूसरों तक पहुंचाता है। भाषा समाज में प्राणियों को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। भाषा के अभाव में साहित्य की कल्पना तक नहीं की जा सकती है।

व्यक्ति समाज में चाहे किसी भी भाषा का प्रयोग कर ले, लेकिन कष्ट आने पर उसके मुख से अनायास ही अपनी क्षेत्रीय भाषा प्रस्फुटित होती है। उदाहरण - यदि हमारे सामने अचानक नाग आ जाये तो हम भयभीत होकर अपने प्रिय व्यक्ति को अपनी ही क्षेत्रीय भाषा में पुकराते है। अधिकांशतः जन्मदात्री माँ को ही हम याद करते हैं - अम्मा, ओइजा, जी, माँ, मम्मी, अम्मी आदि इस प्रकार से इन शब्दों से हम व्यक्ति विशेष के क्षेत्र का पता लगा सकते है। क्षेत्रीय शब्दावली का प्रयोग करने से आत्मकथा की महता बढ़ जाती है। आत्मकथा की भाषा अन्य साहित्यों से अलग होती है। इसमें लेखक जीवन की घटनाओं को इस विधा में ज्यों का त्यों उतारता है इसलिए आत्मकथा की भाषा जीवंत और लोक व्यवहृत होती है। आत्मकथा में प्रयुक्त शब्दों से लेखक के क्षेत्र का पता चलता है, जहाँ पर उसका जन्म हुआ या जीवन का अधिकांश समय व्यतीत किया। आत्मकथा लिखते समय लेखक चाहकर भी अपनी क्षेत्रीय भाषा को नकार नहीं सकता। चन्द्रभान सिंह यादव लिखते हैं कि - ‘‘दलित साहित्य की कलात्मकता और भाषा

संवेदना को लेकर सवाल उठते हैं। भाषा-संवेदना एवं सार्थक रचनात्मक प्रयोग द्वारा दलित आत्मकथाएँ करारा जवाब देती हैं सवर्णवादी आलोचकों को। इन आत्मकथाओं की भाषा में सजीवता, जीवंतता के साथ प्रवाहमयता भी है[405]।''

5.2 भाषा शैली (आत्मकथात्मक)-

अपने भावों को अभिव्यक्त करने की अपनी एक शैली होती है। शैली से तात्पर्य अपनी बात को कहने का ढंग। शैली शब्द का अंग्रेजी भाषा में अर्थ है - स्टाइल। शैली शब्द के अन्य अर्थ-रीति, काम करने का ढंग, तरीका, नियम आदि। संस्कृत काव्य शास्त्र में 'रीति-सम्प्रदाय' के माध्यम में शैली शब्द भाषा के प्रकार को इंगित करता है। शैली के संबंध में संस्कृत में प्रचलित एक बोधकथा के माध्यम से विस्तार से समझाया जा सकता है। बाण भट्ट ने अपने पुत्रों को एक ठूठ वृक्ष दिखाकर उसका वर्णन करने के लिए कहा। एक पुत्र ने कहा - ''शुष्को वृक्षः तिष्ठति अग्रे।' दूसरे शिष्य ने कहा - ''शुष्कं काष्ठं तिष्ठति तत्र।' अधिकांश शिष्यों ने उस ठूंठ वृक्ष को ठूंठ वृक्ष कहकर व्याख्यित किया। एक सरस, कोमल कवि हृदय वाले शिष्य ने कहा कि - ''नीरस तरूरिह विलसित पुरतः।' अर्थात् वह वृक्ष जो कभी रस से भरा हुआ था, वह आज अपना रस खोकर, नीरस बनकर वहां खड़ा है।

[405] दलित आत्मकथाएँ, दर्द के दस्तावेज, हंस, अंक अप्रैल 2011, पृ0 41

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि एक ही घटना या दृश्य को देखकर उसकी व्याख्या करने की शैली भिन्न-भिन्न व्यक्तियों की भिन्न होगी, यही भिन्नता कथा में शुष्कता या सरसता ला सकती है।

डॉ. नीरजा टण्डन जी ने शैली के सम्बन्ध में कहा है कि - ''साहित्यकार द्वारा जब विविध भंगिमाओं से विशेष अर्थवत्ता के साथ अपनी अनुभूतियाँ सम्प्रेषित होती हैं, तो उसका प्रस्तुतीकरण का ढंग 'शैली' कहलाता है। यह 'शैली' भाषा का विशिष्ट प्रयोग है, कथन पद्धति है, प्रणाली है और लेखक के भावों और विचारों को सम्प्रेषित करने वाली विलक्षण शक्ति है[406]।'' साहित्य में प्रत्येक विधा के अभिव्यक्तिकरण की अपनी एक शैली होती है। विशेषरूप से आत्मकथा की विशिष्ट शैली है। आत्मकथा का प्रारम्भ पद्य शैली में हुआ था। बनारसी दास जैन ने अपनी आत्मकथा को पद्य में लिखा था। आधुनिक काल में इस विधा की गद्य शैली में लिखा जा रहा है। वास्तव में आत्मकथा लेखन की सफलता शैली पर निर्भर है। आत्मकथा लेखिकाएं अपनी आत्मकथाओं को भिन्न-भिन्न शैलियों में लिख रही हैं।

एस० स्मिथ और जूलिया वाटसन ने विमेन आटोबायोग्राफी, थ्योरी की भूमिका में लिखा है कि - ''पुरुषप्रधान संस्कृति औरत को बहिष्कृत करके रखती है। यही वजह है कि औरतें अपनी कहानी भिन्न शैली में कहती हैं। आत्मकथा भिन्न रूप

[406] डॉ० नीरजा टण्डन, शैली विज्ञान, पृ0 159

में लिखती हैं । स्त्री का सांस्कृतिक उपादान, उसकी आत्मकथा, परम्परागत मर्द की आत्मकथा के रूपों से भिन्न होती है''[407]। आत्मकथा में विविध शैलियों का मिश्रण होता है। आत्मकथाकार द्वारा एक कृति के विभिन्न परिच्छेदों में तथा भिन्न-भिन्न शैलियों में प्रस्तुत कर इसकी महत्ता को बढ़ाया जाता है।

5.3 **शिल्प का अर्थ: परिभाषा एवं स्वरूप** -

भारतीय जीवन दर्शन में अध्यात्मपरक तत्त्वों का सन्निवेश होने के कारण यहां के निवासियों की प्रवृति सनातन काल के ही कुछ ऐसी रही है कि किसी भी श्रेष्ठ रचना को गौरव प्रदान करने के निमित उसके उद्यव का संबंध सहज ही किसी न किसी दिव्य शक्ति अथवा दिव्य पुरूष के साथ स्थापित किया जाता रहा है। परिणामतः उसके आरंभ और विकास-विषयक वास्तविकता का पता लगाना दुरूह कार्य हो जाता है। आज का बुद्धिवादी आलोचक भी कदाचित इसीलिए इस प्रकार की आस्थाओं का अभ्यासी न होने के कारण उनकी एकांत उपेक्षा कर डालता है। यह प्रवृति अपने आप में अतिवाद के अतिरिक्त और कुछ नहीं। शिल्प का जन्म तो उस रूपम से ही हो गया था, जब मनुष्य के हृदय में निर्माण की भावना का जागरण और उसके पश्चात् वस्तु-विशेष के रूप में उस भावना की अभिव्यक्ति हुई। 'शिल्प' शब्द 'शील' धातु में 'प' प्रत्यय जोड़ने से बना है। 'शील' धातु का अर्थ है - ध्यान करना, पूजन करना, अर्चन करना, अभ्यास करना। 'प' का प्रयोग

[407] महिला आत्मकथा लेखन के संदर्भ में नारी विमर्श - डॉ० राजिन्द्र पाल सिंह, डॉ० ऋतुभ नोट, पृ0 24

प्रायः पीने वाले के अर्थ में होता है। इस दृष्टि से शिल्प का अर्थ ध्यान या अभ्यास को पीने वाला होगा।

5.4 शिल्प की दृष्टि से भाषा शैली -

प्रत्येक रचना भाषा के माध्यम से विशेष रचनात्मक रूप लेकर अविष्कृत होती है। प्रत्येक साहित्यिक रचना के रचनात्मक रूप का संबंध शिल्प से है। शिल्प किसी वस्तु के रचना विधान से संबद्ध होता है। कवि का अनुभव सामान्य नहीं होता, बल्कि विशिष्ट होता है। वह भाषा के विभिन्न आयामों जैसे बिम्ब, प्रतीक, उपमान आदि को तलाशता है जिन्हें शिल्प विधान के अंतर्गत रखा जाता है। अतः अभिरंजना शिल्प भावाभि व्यक्ति का वह प्रभावशाली तरीका है जिसके द्वारा कोई भी व्यक्ति अपने भावों को हृदय स्पर्शी बनाकर पेश करता है। यह प्रतिभा व्यक्ति में सहज ही होती है कि वह सामान्य बात को भी ऐसे अनूठे ढंग से प्रस्तुत करता है कि वह पाठकों पर अपना प्रभाव छोड़ती है।

1. श्री वामन शिवराम आप्टे के अनुसार - शिल्प शब्द की व्युत्पति शिल् + पक् से हुई है, जिसका अर्थ है - ‘‘कला, ललित कला, यांत्रिक कला कुशलता, करीगरी आदि[408]।’’ इसी प्रकार से शिल्प का अर्थ हम भी समझ सकते हैं - किसी को रचने का तरीका।

[408] (सं०) वामन शिवराम आप्टे, संस्कृत हिन्दीकोश, भाग-3, पृ0 1554

2. कालिका प्रसाद ने वृहत् हिन्दी कोश के अनुसार - शिल्प का शाब्दिक अर्थ है - ''वस्तु के रचने का ढंग या तरीका[409]।''

3. डॉ. श्याम सुन्दर दास ने हिन्दी शब्द सागर में शिल्प के अर्थ बताए हैं

(क) हाथ से कोई चीज बनाकर तैयार करने का काम दस्तकारी जैसे - बरतन बनाना, कपड़े सीना, गहने गढ़ना आदि।

(ख) रूप, कला संबंधी व्यवसाय।

(ग) दक्षता, कौशल, चातुर्य, रचना? आकार, आवृति आदि''[410]। अंग्रेजी में शिल्प के लिए टैक्नीक तथा टैक्नीक्यू शब्द प्रचलित है। इसका अर्थ है - रचना पद्धति। अंग्रेजी में 'एक्सप्रेशन का अर्थ है - अभिव्यंजना या अभिव्यक्ति।

4. डॉ. कमल किशोर गोयनका के अनुसार - ''एक्सप्रेशन शब्द शिल्प का सही पर्याय नहीं है। अभिव्यक्ति शब्द शिल्प के लिए ठीक प्रतीता होता है, लेकिन अभिव्यक्ति नियोजित-अभियोजित, गणित-अगणित, सफल-असफल सभी प्रकार की हो सकती है, परन्तु शिल्प शब्द से केवल कौशलतापूर्वक अभिव्यक्ति का ही अर्थबोध होता है[411]।''

डॉ. नगेन्द्र ने शिल्प का अर्थ माना है कि शिल्प को अभ्यास का श्रम कहा गया है। उनके अनुसार - ''शिल्प बहुत कुछ साधना की वस्तु है। उसके लिए परिष्कृत

---

[409] सं० कालिका प्रसाद, वृहत हिन्दी कोश, पृ0 1239-1334

[410] डॉ० श्याम सुन्दर दास, हिन्दी शब्द सागर, भाग-9, पृ0 475

[411] कमल किशोर गोयनका, प्रेमचंद के उपन्यासों का शिल्प विधान, पृ0 15

रूप के अतिरिक्त कल्पना की समृद्धि और प्रयत्न साधना अपेक्षित होती है[412]।'' अभिव्यंजना शिल्प से आशय अभिव्यक्ति की उस कलात्मकता से है जो उसमें प्रयुक्त मुहावरों, लोकोक्तियों, अलंकारों, शब्द शक्तियों, गुणों, छंदों, सूक्तियों के सुष्ठु संयोग का प्रतिफलन कही जा सकती है। इनमें सबसे प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण तत्त्व भाषा शिल्प है। अन्य सभी उपादान भाषा से उपर आश्रित है। उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह स्पष्ट कहा गया है कि शिल्प में सभी कलाएं समाहित हैं, जिसमें साहित्य कला भी समाहित है। शिल्प के अर्थ व परिभाषा के विवेचन से स्पष्ट है कि शिल्प का स्वरूप विकासशील है। शिल्प शब्द अनेकार्थी है। पहले यह शब्द, दस्तकारी के लिए प्रयुक्त होता था, लेकिन धीरे-धीरे इसका स्वरूप विकसित हो गया और यह साहित्य के क्षेत्र में प्रवेश कर गया। साहित्य क्षेत्र की रचना प्रक्रिया में शिल्प एक सुनिश्चित एवं महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। वास्तव में शिल्प में मुख्य रूप से कला पक्ष ही रहता है। यह जन्मजात न होकर अर्जित अर्थात् अभ्यास पर आश्रित होता है। साहित्यिक कृति की निर्माण प्रक्रिया ही शिल्प की प्रक्रिया मानी जाती है।

डॉ. त्रिभुवन सिंह कहते हैं कि - ''कल्पना और यथार्थ के भेद को समाप्त करने का काम शिल्प ही करता है, जिसके माध्यम से अभिप्रेत उद्देश्यों का रूपातंरण संभव होता है[413]।''

---

[412] डॉ० नगेन्द्र, विचार और विवेचन, पृ0 120

[413] डॉ० त्रिभुवन सिंह, हिन्दी उपन्यास: शिल्प और प्रयोग, पृ0 251

शिल्प साहित्य के भाव पक्ष का साकार रूप है। शिल्प में साहित्यिक कृति का रूप, शैली, विषय-वस्तु, भाषा आदि घटकों का परस्पर पूरक सामंजस्य होता है। शिल्प रचना को विशिष्ट बनाता है। लेखिकाओं को परिवार समाज तथा साहित्य जगत् में जो कटु अनुभव हुए उनका, खुलासा उन्होंने अपनी आत्मकथाओं में बड़ी सूझ-बूझ से अधिकांशतः शिल्प भाषा का प्रयोग किया है। शिल्प का अर्थ अभिव्यक्ति है। लेखिका अपनी बात को दूसरों तक पहुंचाने में कितनी सक्षम सिद्ध होती है। जिससे किसी दूसरे की भावना को ठेस न पहुंचे और अपनी बात की दूसरों तक पहुंच पाए। लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथा में मर्यादा और शालीनता बनाये रखने के लिए शिल्प भाषा का प्रयोग किया है। कृष्णा अग्निहोत्री जी ने अपने परिवार की मर्यादा का ख्याल रखते हुए बचपन में रिश्तेदारों द्वारा किये गये यौन शोषण को अपनी भाषा में उजागर किया है। रिश्ते में चाचा की नीच हरकतों का वर्णन भाषा में उठाया है कि ''भ ने आव देखा ताव मुझे कसकर पकड़ लिया और मेरे नाजुक अनछुए कुंवारे होठों व गालों को पागल से चूमने लगें कमसिन दुबली में छटपटाती रही, जलते अंगारों की सी जलन थी[414]।'' रिश्ते के चाचा लेखिका को बार-बार सताने लगे। वह आगे कहती हैं कि - ''भ मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ गए। सीढ़ियों से उतरते समय वह बहुधा मेरे फड़फडाते जिस्म को दो क्षण को भी दबोच लेते[415]।'' लेखिका की मामी ने उन्हें 'भ' के चाल-चलन के

[414] लगता नहीं, दिल मेरा, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ0 52

[415] वहीं, पृ0 53

बारे में बताया कि - ''भ इधर लगातार रात में उस औरत के चक्कर लगा रहे थे। शायद कांस्टेबल को शक हो गया, इसलिए वह छुपकर बैठा रहा, औरत को भी पता नहीं था, उसने रात में दरवाजा खोल दिया। 'भ' अंदर घुसे ही थे कि सिपाही ने छूरा मारा। यह तो भाग्य ही था कि वह बच गए''[416]।

कृष्णा अग्निहोत्री जी एक मंत्री की कुदृष्टि का पर्दाफाश अपनी भाषा शिल्प में इस प्रकार बता रही हैं कि - ''मंत्री मेरे हथियार थे, उन्हें फोन किया और परमिशन स्वीकृत। लेकिन अ. के घर रहने का प्रश्न ही न था। उस पर एक बार अ. चाचा ने भ. वाली हरकत करने का प्रयास किया''[417]। कृष्णा अग्निहोत्री जी जब रिसर्च का कार्य कर रही थीं तब उन्होंने रिसर्च कार्य में सहायता करने के लिए विश्वेश्वर को रख लिया था। विश्वेश्वर के मन में लेखिका के प्रति कामवासना का भाव जाग्रत होने पर लेखिका ने उससे पल्ला झाड़ लिया। वह उस की जगह-जगह पर बुराई करने लगा। लेखिका ने जब लिखना शुरू किया तब उसके द्वारा लिखित 'अबोध पीड़ा' कहानी को कादंबिनी पत्रिका में भाषा के रूप में नाम र. उपाध्याय जी द्वारा छुपाकर छापा गया। विश्वेश्वर द्वारा की गई बदनामी की खबर र. उपाध्याय जी को भी लगी। लेखिका बताती है कि - 'ऐसी ही अफवाहों में कैद होकर र. उपाध्याय ने बंबई से पत्र लिखा कि, यदि आपको किसी पुरूष मात्र की

---

[416] वहीं, पृ0 53

[417] वहीं, पृ0 61

आवश्यकता है तो मैं अपनी सेवाएं देने को उत्सुक हूँ, वैसे मुझे पता है कि आपके पास पुरूषों की लंबी पंक्ति है, मैं इस समय बेकार हूँ, कम से कम खा-पीकर कुछ समय तो आपके पास निकले[418]।'' लेखिका को उनके द्वारा दिया गया यह प्रस्ताव दुःखी करता है। कृष्णा अग्निहोत्री जी की शिल्प भाषा में र. उपाध्याय के साथ-साथ सं. जयसवाल का भी जिक्र करती है। एक बार लेखिका की मुलाकात सं. जायसवाल से होती है। लेखिका ने उनका अच्छे से आदर सत्कार किया तथा उनके लिए भोजन की भी व्यवस्था की। सं. जायसवाल ने लेखिका को कुछ समय बाद पत्र लिखा कि - ''मैं आपके साथ रहना चाहता हूँ वगैरह-वगैरह[419]।'' वह आगे बता रही हैं कि - ''बहुत वर्षों बाद सं. जायसवाल मुझे गोरखपुर में मिले। वही प्रयत्न कि मुझसे अकेले में बात करें, मैं रूपवती हूँ, आकर्षक हूँ आदि। अब ऐसी बातों का कोई समझदार स्त्री क्या उत्तर देगी। मुझे तो अपनी प्रशंसा बेमानी लगती है और जैसे ही कोई प्रशंसा प्रारम्भ करता है, मुझे सांप सूंघ जाता है कि अब मैं चुप रहूँगी और सामने वाला नाराज होगा[420]।''

लेखिका ने अपने देह सम्बन्धों को अधिकांशतः भाषा में ही उजागर किया है क्योंकि उनके अचेतन मन में बैठा भय उन्हें नाम उजागर करने से रोकता है। स्त्रियों को बचपन से सहनशीलता का पाठ संस्कार की तरह एक घुट्टी बनाकर

---

[418] वहीं, पृ0 250

[419] वहीं, पृ0 251

[420] वहीं, पृ0 251

पिलाया जाता रहता है। इनकी भाषा के प्रयोग से लेखिकाओं में 'बाल्डनेस' का अभाव परिलक्षित होता है।

शीला झुनझुनवाला जी के पति टी.पी. झुनझुनवाला जब आयकर का छापा डालने दिव्यांग पटेल के घर अपनी टीम के साथ जाते हैं, तब पटेल साहब अपने भाई को अपनी भाषा में आयकर अधिकारियों के आने की सूचना कुछ इस प्रकार से देते हैं।

''शैलेश तमें समझो .... तमें समझो[421]।''

हम सब अपनी भाषा के द्वारा ही अपने भावों को दूसरों तक समझने-समझाने का काम हमारी अपनी भाषा ही है। भाषा ही एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भाव पैदा कर सकता है।

5.4.1 लाक्षणिक भाषा का प्रयोग: मुहावरों का प्रयोग -

लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथा में भाषा की सामर्थ्य को बढ़ाने वाले उपकरणों में मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। जिस कारण यह पात्रों के कथन से मेल खाते हैं। किसी भी भाषा में मुहावरों का प्रयोग भाषा को सुन्दर, प्रभावशाली, संक्षिप्त तथा सरल बनाने के लिए किया जाता है। मुहावरे का प्रयोग वाक्य के प्रसंग में ही होता है, अलग नहीं । मुहावरा अपना असली रूप कभी नहीं बदलता

[421] कुछ कही कुछ अनकहीं, शीला झुनझुनवाला, पृ0 127

कार्टून चरित्रों की तरह से सदैव एक से रहते हैं। अर्थात् उसे पर्यायवाची शब्द में अनुदित नहीं किया जा सकता है।

लेखिकाओं ने मुहावरों का प्रयोग पात्रों एवं स्थिति के अनुकूल किया है। जिस कारण वह पात्रों के कथन से मेल खाते हैं, उनकी स्थिति के अनुकूल ही मुहावरों का प्रयोग किया जा रहा है। मुहावरों के प्रयोग से वाक्य का भाव सौन्दर्य और अर्थ-गंभीरता बढ़ जाती है। कृष्णा अग्निहोत्री ने अपनी आत्मकथाओं में मुहावरों का बहुलता से प्रयोग किया है। जैसे - ''आग बबूला होना, दो नावों पर साथ पैर नहीं रखा जा सकता, दाँत काटी रोटी सी दोस्ती, हाथ पैर फूल गये, कुएं से निकले खाई में फंसे''[422]। मैत्रेयी पुष्पा जी ने अपनी आत्मकथाओं में लोकोक्तियों का काफी प्रयोग किया है - ''गेरू घोलना, घोड़ी नाची तो अपनी शोभा को''[423]। पुष्प शोभा जी ने अपनी आत्मकथा में मुहावरेदार भाषा का प्रयोग बहुलता से किया है यथा - ''तिल का ताड़ बनाना, कभी करेले की बेल पर लौकी लगी देखी, जान बची लाखों पाए, हींग लगे न फिटकरी, रंग चोखा भी होय, हाथ पैर फूलना, कांटो तो खून नहीं, सैर को सवा सेर मिल, ओखली में सिर दिया है तो मूसलों से क्या डरना, लातों के भूत बातों से नहीं मानते, जाको रखे साइयां मार सके ना कोय, न तीन में थी न तेरह में, वह जोंक की तरह चिपक गया, सपूत के पांव पालने में

---

422 गुड़िया भीतर गुड़िया, मैत्रेयी पुष्पा, पृ0 11, 199 7

423 लगता नहीं है दिल मेरा, कृष्णा अग्निहोत्री, पृ0 140

ही दीखने लगते हैं''[424]। सुशीला टाकभौरे जी ने अपनी आत्मकथा में मुहावरों का जमकर प्रयोग किया है। उदाहरण - ''जिसके पैर न फटी बिवाई वह क्या जाने पीर पराई, पानी में रहकर मगरमच्छ से बैर, भीगी बिल्ली बने रहना, खोदा पहाड़ निकली चुहिया, आ बैल मुझे मार''[425]। शीला झुनझुनवाला जी ने अपनी आत्मकथा में मुहावरों का प्रयोग किया है - ''सिर मुंडाते ही ओले पड़े''[426]।

इस प्रकार देखने में आता है कि महिला आत्मकथाकारों ने मुहावरेदार भाषा के माध्यम से अपने विचारों को अधिक प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया है |

5.5 व्यंग्यात्मक भाषा ।

व्यंग्य साहित्य की एक विधा है जिसमें उपहास, मज़ाक (लुत्फ) और इसी क्रम में आलोचना का प्रभाव रहता है। यूरोप में डिवाइन कॉमेडी, दांते की लैटिन में लिखी किताब को मध्यकालीन व्यंग्य का महत्वपूर्ण कार्य माना जाता है, जिसमें तत्कालीन व्यवस्था का मज़ाक उड़ाया गया था। व्यंग को मुहावरे मे व्यंग्यबाण कहा गया है। हिन्दी में हरिशंकर परसाई और श्रीलाल शुक्ल इस विधा के प्रमुख हस्ताक्षर हैं[427]।

---

424 आत्मकथा पुष्पा शोभा की, पुष्पाशोभा विद्यालंकृता, पृ0 62

425 शिकंजे का दर्द, सुशीला टाकभौरे, पृ0 66

426 कुछ कही कुछ अनकही, शीला झुनझुनवाला, पृ0 107

427 https://hi.wikipedia.org/wiki

वर्तमान समाज में व्याप्त अव्यवस्थाओं को देखकर कभी-कभी मन व्यथित हो जाता है, चाहे वह अव्यवस्था सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक या धार्मिक हो मन इन अव्यवस्थाओं का प्रतिकार करना चाहता है परन्तु किन्हीं व्यक्तिगत कारणों से हम इनका प्रतिकार नहीं कर पाते और ये भावनाएँ मन के किन्हीं कोने में संचित होने लगती है। व्यंग्यकार इन्ही संचित भावनाओं को व्यंग्य के माध्यम से समाज में लाने का प्रयास करता है[428]।

महिला लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं में व्यङ्ग्यात्मक भाषा का सुन्दर रूप से उपयोग किया है | शीला झुनझुनवाला अपनी आत्मकथा "कुछ कही कुछ अनकही" में लड़कों के मुकाबले लड़कियों की दशा की तुलना करते हुये समाज के चिन्तन पर व्यङ्ग्यात्मक भाषा के माध्यम से कटाक्ष करती हैं[429]|

5.5 भाषा में विभिन्न भाषाओं का प्रयोग -

लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं में अपने भावों की अभिव्यक्ति करने के लिए साहित्यिक भाषा की अपेक्षा क्षेत्रीय भाषा की बहुलता का प्रयोग किया है, जिस कारण उनके जीवन की सम्पूर्ण स्थितियाँ जीवन्त हो उठती है। आत्मकथा को छोड़कर साहित्य की किसी भी विधा में लेखक अपनी इच्छा से पात्रों के साथ-साथ भाषा को भी गढ़ सकता है, लेकिन आत्मकथा विधा में आत्मकथाकार की क्षेत्रीय भाषा अनायास ही प्रस्फुटित हो उठती है। मैत्रेयी पुष्पा पहली लेखिका हैं

[428] https://www.scotbuzz.org/2021/01/vyang-ka-arth.html

[429] कुछ कही कुछ अनकही, शीला झुनझुनवाला, पृ0 184

जिनकी पृष्ठभूमि ग्रामीण रही। मैत्रेयी ने ग्रामीण परिवेश को अपनी आत्मकथाओं का आधार बनाया। उनकी आत्मकथाओं में एक विलक्षण खुलापन और बेबाक सहजता समाहित है। लेखिका ने अपनी आत्मकथाओं में बुन्देलखण्ड की बोलियों का प्रयोग पूरी उदारता के साथ किया है। काफी समय से दिल्ली में रहने के बाद भी बुंदेलखण्ड उनके रोम-रोम में समाया है। मैत्रेयी पुष्पा के लेखन की ताकत के पीछे निश्चित ही ग्राम्य जीवन की स्थितियाँ हैं क्योंकि उन्होंने इन्हें निकट से देखा है| उनके लेखन की जड़ें गांव से ही जुड़ी हैं। मैत्रेयी के लेखन शक्ति के पीछे ग्राम्य जीवन की वे परिस्थितियाँ हैं जिन्हें उन्होंने निकट से देखा है भले ही वे महानगरीय परिवेश में रह रही है परन्तु उनका हृदय तो गांव में ही रमता है इसी कारण उनका लिखा प्रत्येक अक्षर सुधीजनों को गांव की ओर ले जाता है। स्थानीय ग्रामीण भाषा के अनगढ़ शब्दों के प्रयोग ने आत्मकथा को सत्यता प्रदान की है। वैसे भी आत्मकथा की भाषा में बनावटीपन नहीं होता क्योंकि एक प्रदेश विशेष के जीवन की कथा उस प्रदेश विशेष की भाषा के साथ ही उभरकर आती है। विभिन्न पात्रों की भाषा उनके परिवेश जीवन स्तर उनकी मानसिकता को प्रदर्शित करती है। मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा में कहीं-कहीं, प्रादेशिक प्रभाव दिखाई देता है। मैत्रेयी ने झांसी के खिल्ली गांव की भाषा को अपनी आत्मकथा में प्रयुक्त किया है - ‘‘अरे! मामाजी, तुम नहीं जानते अपनी बहन की बीमारी? सुई कसक रही है इन दिनों। रात-भर कराहती रहीं है। कलेजे में लोका मरती हैं, टीसें मगज तक जाती है। यहां तो अपना घर है, माथुर के टिरैनिंग सेंटर में ऐसे

ही बाबरी-सी हो गई थी। तब सुई मगज फंसी हुई थी[430]।'' कृष्णा अग्निहोत्री जी ने अपनी आत्मकथा में अपनी क्षेत्रीय भाषा का प्रयोग किया है। वह अपनी मां से कनुपरिया भाषा में कहती हैं कि - ''अम्मा हम कृष्णा हैं, का हमें चीन्हीं नाहि[431]।'' पुष्पा शोभा जी के पूरब के नौकर रामहरख द्वारा प्रयुकत भाषा में कहती है कि - ''हुआ क्या भाभी जी, हमको कहिन पेटी ले आ, जब पेटी गहन तो लताड़ दी न; कठिन जा भाग यहां से। हमसे का कोई गलती होई गहन[432]?''

शीला झुनझुनवाला जी ने अपनी ही आत्मकथा में जयप्रकाश जी द्वारा प्रयोग की गई भोजपुरी भाषा को ज्यों का त्यों लिखा हैं - ''का हाल बा? आवो बैठा, ई का करत बाडू? हमरे पैर ना छुएके चाही, राउर ई नातिन पतोह बा। ई लोग पैर छुइबे करी, ई केकर पतोह है[433]?'' इनकी (शीला झुनझुनवाला) ही अपनी आत्मकथा में गुजारती भाषा का यथा प्रसंग प्रयोग किया गया है। ''कोण हो? कोण हो? तमें दिव्यांग ना दोस्तार छो ... तमे? ना ना ! दिव्यांग ... दिव्यांग, जल्दी आवजो, जोवो तो कोण छे''[434]? कुसुम अंसल जी ने पंजाबी शब्दावली का प्रयोग किया है। वह नारी के अंतरंग को पहचानने की कला में निस्णात हैं। वह अपनी सास के द्वारा किये गये कटाक्ष से आहत होती है। उनकी आत्मकथा में

---

430 कस्तरी कुण्डल बसै, मैत्रेयी पुष्पा, पृ0 220

431 कृष्णा अग्निहोत्री, लगता नहीं है दिल मेरा, पृ0 28

432 आत्मकथा पुष्पाशोभा, पुष्पाशोभा विद्यालंकृता, पृ0 167

433 कुछ कहीं कुछ अनकही, शीला झुनझुनवाला, पृ0 296-297

434 वहीं, पृ0 127

एक नारी की नारी के प्रति मानसिकता को दर्शाया गया है। ''इन्हीं खलकतदे सामने तू पराये मरद दा हत्थ फडिया पियार दीआं गल्ला कीतिआं ... तन्नै शरम नहीं आई ... मैं तों हैरान हां तेरे ते ... इन्ना चुप्प ऐसे करके रहिन्दी है[435]।''

कुसुम अंसल जी जब भी अपनी आगरे वाली मां के शव को घर लाती हैं तब उनकी सास ताना देते हुए कहती है - ''हाय राम, कैसी झल्ली है सुखी सांदी आपणे घर क्यूंतै आई ऐहो जिही मिट्टी, सकी माँ थोड़े ही सी ... काका तूँ तां समझदार सी, तू क्यूं लिआया ... जा लै जा आगरे[436]।'' लेखिका जब अपनी सास से माँ के प्रति अपने कर्तव्य के बारे में कहती है तो उनकी सास कटाक्ष करती हैं कि - ''चल निभा दिता तूँ ... बड़ी सेवा कीती उन्हांदी ... पर ओ कित्थे बनी मेरी माँ, सारा माल मत्ता आपणे जवाई नूँ दे गई ... मेरा पुत्तर ते तूँ बेवकूफ बन दे रहे''[437]। पुष्पाशोभा जी पंजाबी परिवार से थीं इसलिए उनकी आत्मकथा में पंजाबी शब्दावली का बहुलता का प्रयोग हुआ है। ''मतरई (सौतेली), घी (बेटी) आदि[438]।'' उन्होंने पंजाबी भाषा का ही जिक्र किया है - ''हाय हाय री सरकारी वर्दी न मरदी न मंजा छडदी, जित्थे रैहंदे बड़े-बड़े पहलवान खोदे गिरियां ते बादाम, काले-काले बछल आए जम्मन बहार, सत्श्री अकाल छोटे बाबू भरजाई जी पैरी पैना, छोटी

---

435 कुसुम अंसल, जो कहा नहीं गया, पृ0 77

436 वहीं, पृ0 163

437 वहीं, पृ0 163

438 आत्मकथा पुष्पाशोभा, पुष्पाशोभा विद्यालंकृता, पृ0 82

जठ पराठी खादी सी कुछ पचताई नई[439]।'' अजीत कौर ने पंजाबी के ऐसे शब्द जो आमतौर पर बोलचाल के प्रयोग किये जाते हैं उनका आत्मकथा में प्रयोग किया गया है जिनसे सम्प्रेषण में कोई कठिनाई नहीं होती है - ''मिन्नत, गरा, अरदास, कमबख्त, अहिस्ता, जायका आदि[440]।'' शीला झुनझुनवाला ने अपनी आत्मकथा में पंजाबी शब्दावली का भी प्रयोग किया है। यथा- ''असीरवादी मदद जरूर करांगे। सानूं देखना है कि त्वानूं किस तरह वे वहां जाने नहीं देवांगे[441]।''

उर्दू शब्दावली का प्रयोग लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथा में पाठकों की सुविधा के लिए उर्दू के साथ-साथ हिन्दी के अर्थ भी लिखें हैं। कहते हैं - ''जारो-कतार (फूट-फूटकर) देवजाद (दानव), महफूज (सुरक्षित), मुख्तलिफ (भिन्न) परस्तिश (पूजा) दानिशमंदी (बुद्धिमनी), साफगी (स्पष्टवादी), फिजा (वातावरण), तलखी (कडवाहट), नजर (विहंगम दृष्टि)।[442]'' आदि शब्दों का बोलचाल में प्रयोग किये जाते हैं। अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग आधुनिक युग में बातचीत में अंग्रेजी शब्दों का बहुतायत प्रयोग करते हैं। लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथा में उसी बोलचाल की शैली का अपनाया गया है, कृष्णा अग्निहोत्री जी ने अपनी आत्मकथा में उसी अंग्रेजी शब्दों का बहुलता से प्रयोग हुआ है, उदाहरण - ''कान्फीडेंशियल,

---

439 वहीं, पृ0 32

440 अजीत कौर, खाना बदोश, पृ0 19

441 शीला झुनझुनवाला, कुछ कहीं कुछ अनकहीं, पृ0 210-211

442 इस्मत चुगताई, कागजी है पैरहन, पृ0 7, 10, 12, 14, 15, 16, 19

प्रोमोशन[443]।'' कृष्णा अग्निहोत्री जीने अपनी आत्मकथा ने द्वितीय खण्ड में भी अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग किया है - ''पर्स, डेयरिंग, मीटिंग, अंडरग्राउंड, टार्चर[444] ।'' कृष्णा अग्निहोत्री ने अपनी आत्मकथाओं में अंग्रेजी शब्दों को कहीं-कहीं आंग्ल लिपि का प्रयोग हुआ है - ''हाउ डेयर यु [445]''। कृष्णा अग्निहोत्री जी ने अपनी आत्मकथाओं में अंग्रेजी के वाक्यों का भी प्रयोग हुआ है - उदाहरण ''टेलीग्राफिक कैंसल, विल यू लाइक टू, डांस विद, मी हज इट टू, आऊ आर यू, यंग चामिंग लेडी, गो टू द प्रीटिसेय किस टू दलवलिपस्ट सैल्यूट टू द नोबलेस्ट, आई डोंट लाइक वेयर लैगज, यू बट अठ नेवर न्यू यू अर सो जूअल टू हर, टेल मी, हू इज द यंग फौरचुनेट हैस्बैंड, आई एम अशेक्ड आफ यू लेडी यू आर डबल एम.ए. सो मच एजुकेट एंड यू गैट बीटिंग आन रोड? डोट रिपीट इट अगेन। अदरवाइज स्टूडेंटस विल नेवर रिस्पेक्ट यू[446]।''

शीला झुनझुनवाला ने अपनी आत्मकथा में अंग्रेजी वाक्यों का प्रयोग हुआ है - ''यू सी, योर चाइल्ड कांट अंडरस्टेंड ए वर्ड आव, इंगलिश। ही इज नाट नो दि मीनिंग आफ़ कम एंड गो इवन। हाऊ कैन आई एडमिट हिम[447]।'' कुसुम अंसल जी की साधारण बोलचाल से हटकर आभिजात्य पुट लिए हुए हैं। उनकी आत्मकथा

---

443 कृष्णा अग्निहोत्री, लगता नहीं है दिल मेरा, पृ0 145, 146

444 कृष्णा अग्निहोत्री, और और ओरत, पृ0 29, 68, 93, 100

445 वहीं, पृ0 90

446 कृष्णा अग्निहोत्री, लगता नहीं है दिल मेरा, पृ0 23, 142, 143, 145, 156, 158, 202, 231, 236

447 शीला झुनझुनवाला, कुछ कहीं कुछ अनकहीं, पृ0 149

में - ''फैस्सीनेट, कैपसिटी, इनसिक्योर, रेशनेलाईजेशन, डायलेक्ट[448]।'' काल मी हिज कीप, वीक रिलेशनशिप[449]।'' पुष्पाशोभा जी ने अपनी आत्मकथा में अंग्रेजी कहावतों का प्रयोग है - ''देयर इज मैनी ए स्लिम, विट् दीन कप एंड दिलिप[450]।'' इनकी अपनी ग्रामीण भाषाओं में संस्कृति का भी प्रयोग हुआ है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपनी आत्मकथा में संस्कृति के सभी पक्षों का उजागर किया है - ''धरा कैसी है, मोय देवे का चाव गंगा कैसी बैह मोह देखवे कौ चाव विद्या दारीनहाने चली, संग चले सब यार[451]।''

विवाह के अवसर पर गाये जाने वाले शगुन के गीतों का उदाहरण -

''बुँदबुँदिपन बरसैगो मेह,
झमकारेन चीजेंगो माढ़यौ
तुम बैबो लढ़लढ़ी हौ चौक
तिहारी बुआ करेंगी आरतौ[452]।''

कृष्णा अग्निहोत्री ने -''कहं काशी, कहं कश्मीर, कहं खुरासेन, गुजरात तुलसी ऐसे नरन को भाग्य गति ले जात[453]।'' कृष्णा अग्निहोत्री जी ने बचपन में देश प्रेम के

448 कुसुम अंसल, जो कहा नहीं गया, पृ0 37, 63, 68, 69, 133

449 वहीं, पृ0 67

450 आत्मकथा पुष्पाशोभा, पुष्पाशोभा विद्यालंकृत, पृ0 182

451 मैत्रेयी पुष्पा, कस्तरी कुण्डल बसै, पृ0 215

452 वहीं, पृ0 224

453 कृष्ण अग्निहोत्री, लगता नहीं है दिल मेरा, पृ0 19

प्रति संस्कृति में ग्रामीण का मोह है - ''मांग रही है माँ बलिदान आर्यभूमि के वीर बांकुरे परतत्रंता में सोने वाले[454]।''

कुसुम अंसल - ''एक भी ढ़लती जीवन दोपहरी, माँ माथे पर चुनर खींच बोली तू भावी ग्रहिणी है रानी मेरी[455]।'' विवाह के पूर्व कुसुम अंसल ने कहा है कि - ''मेरी डोली के कहार धीरे चलो रे ... देयो मेरा मन डगमगयो रे .... कुछ कर ली विश्राम इस नदी के पास मेरे बहुत से एकाकी पलों की याद यहाँ बिखरी है सांसों के साथ[456]।''

5.6 **बिम्ब योजना**

भाषा की अभिव्यक्ति में बिम्ब की बहुत अधिक आवश्यकता है। अभिव्यक्ति के माध्यमों में जहां भाषा की अहम् भूमिका है वहीं बिम्ब भाषा को जीवंत और सम्प्रेषण के लिए अति आवश्यक है। बिम्ब केवल चित्र नहीं होते अपितु कोरी चित्रात्मकता से बढ़कर संवेदनात्मक चित्र होते हैं अर्थात् किसी भी शाब्दिक रूप से ऐसा वर्णन करना जिसमें वह प्रत्यक्ष प्रतीत हो, बिम्ब कहलाता है।

बिम्ब शब्द को अंग्रेजी भाषा में इमेज कहा जाता है। बिम्ब का अर्थ है - चित्र, कल्पना चित्र, शाब्दिक चित्र खींचना। अर्थात् जब किसी घटना का वर्णन इस प्रकार किया जाए कि सारा दृश्य आंखों के सामने प्रत्यक्ष अनुभूत हो। उद्भव के आधार

---

[454] वहीं, पृ0 47

[455] कुसुम अंसल, जो कहा नहीं गया, पृ0 47

[456] वहीं, पृ0 49

पर बिम्ब दो प्रकार के होते हैं। स्मृति जन्य तथा कल्पित या स्वरचित। स्मृति जन्य बिम्ब में पूर्वदष्ट वस्तुओं अथवा दृश्यों की स्मृति सम्बन्धी पूर्व संचित अवशेष होते हैं जो समय-समय पर जाग्रत होते रहते है। उदाहरण - अपने किसी अभिन्न मित्र की याद आते ही दृश्य बिम्ब के रूप में उसकी छवि, श्रवण बिम्ब के रूप में उसकी आवाज आदि की प्रतिमाएं हमारे मन में तुरन्त जाग्रत हो उठती है। कतिपय बिम्ब स्वाचित होते हैं। यह कल्पना के संयोजन से संयोजित होकर प्रतिमा निर्माण में सहायक होते हैं। कल्पित बिम्ब के व्याख्या अपने एक परिचित व्यक्ति के माध्यम से करने का प्रयास करती है। हमारे एक परिचित मिश्र के विवाह के सोलह वर्ष बाद भी कोई संतान वहीं है। मित्र के पिता ने कल्पित रूप में अपनी पौती का बिम्ब चित्र अपने मन में बना लिया है तथा काल्पनिक पौती का नामकरण भी कर दिया। अपनी आत्मकथाओं में लेखिकाओं ने ऐसे जीवन्त बिम्बों का प्रयोग हुआ है। जिससे समस्त घटना को पाठक अपने आस पास घटित होते हुए अनुभव करता है। रमणिका गुप्ता ने अपने ट्रेड यूनियन के जीवन में कई बार जीवन मृत्यु का खेल खेला। वह 'कूजूकूच' के दौरान अपनी संघर्ष गाथा को आत्मकथा में खूबसूरत बिम्बों के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं - ''सिपाही बाहर चला गया। मैं दीवार में सटी बैठी रही। मेरे बाएं पक्ष पर जो खुली तरफ था लाठियां बरसती रहीं, न जाने कितनी लाठियां बरसीं। मैं गुम-सुम रही। वे लोग अब एक-एक कर अन्दर आते मुझे लाठी मारते, बाहर सिपाही को थमाते

और चल देते''[457]। पंजाबी लेखिका अजीत कौर की पुत्री कैंडी की मृत्यु का बिम्ब चित्र पाठकों ने हृदय की द्रवीभूत कर देता है - ''अंदर से स्ट्रैचर पर वह आ रही थी। खामोश सोई हुई। मैंने उसका माथा चूमा, होंठ चूमें, होठों पर सफेद प्यास जीम हुई थी। आंखों के कोनों से आंसू अभी भी कनपटी पर सूखे हुए थे। खामोश आंखों के कमलों को गहरी वाली झालर ने ढंका हुआ था''[458]।

5.7 प्रतीक योजना –

प्रतीक शब्द का अंग्रेजी अर्थ 'सिम्बल' है। किसी शब्द, चिह्न, ध्वनि, संकेत अथवा वस्तु द्वारा किसी अप्रस्तुत वस्तु का बोध करना प्रतीक है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि प्रतीक ऐसा शब्द चिह्न है जिसमें किसी अदृश्य वस्तु का स्पष्ट भाव का बोध हो जाता है। उदाहरण - सुन्दरता के लिए चांद का उपमान दिया जाये। चांद प्रतीक है सामाजिक मान्यता प्राप्त है। चांद के माध्यम से अदृश्य वस्तु की सुन्दरता का अनुमान लगाया जा सकता है। विवाहिता स्त्री द्वारा प्रयोग किये जाने वाले आभूषण उदाहरण - बिछुएँ, मंगलसूत्र उसके सुहाग का प्रतीक हैं। गले में लटका क्रास व्यक्ति के अस्तिक ईसाई होने का प्रतीक है। राष्ट्र के सूचक चिह्न उदाहरण - राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय पुष्प, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत आदि सब राष्ट्र के प्रतीक हैं जो अगोचर या अप्रस्तुत को प्रत्यक्ष करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मनुष्य अपने सामाजिक धार्मिक तथा

[457] हादसे, रमणिका गुप्ता, पृ0 104

[458] अजीत कौर, खानाबदोश, पृ0 31

व्यवहारिक जीवन में प्रतीकों का बहुत ही शक्तिशाली माध्यम है। मनोवैज्ञानिक प्रतीकों के माध्यम से ही अचेतन मन की परतों को खोलने का प्रयास करते हैं।

लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं में अपने भावों मन की सुप्त भावनाओं, संघर्षों, भावावेगों आदि का प्रतीकों के माध्यम से चित्रण किया है। लेखिकाओं ने प्रतीक का प्रयोग प्रकृति के मानवीकरण के रूप में रूपक तथा उपमा के रूप में, चरित्र भाव तथा विचार विशेष के प्रतिनिधि के रूप में किया है।

अजीत कौर जी अपने को जख्मी बाज का प्रतीक मानते हुए लिखती है कि - ‘‘मैं तो जख्मी बाज की तरह एक बहुत पुराने, नंगे दरख्त की सबसे उपर की टहनी पर बैठी थी| - अपने जख्मों से शर्मसार, हमेशा उन्हें छुपाने की कोशिश करती हुई’’[459]। वह अपने कॉलेज के दिनों में बलदेव के साथ बिताये स्वर्णिम पलों को मोहनजोदडों का प्रतीक मानते हुए कहती है कि - ‘‘इन गुजरे जमानों की धूल के नीचे वह सारे का सारा मोहन जो दड़ो आज भी जिंदा है। सब कुछ ज्यों का त्यों। सिर्फ इन पुराने कमरों की जिनकी ताकीर उस धूप में और पुराने अनछुई चूरी मिट्टी में और धूप सेंकती चट्टानों में और थर-थर कांपते घास के तिनकों में और बच्चों की तरह छोटी-छोटी, गोरी हथेलियों की मुलायम दोताली बजाकर हंसते हुए पतों में, और बौने दरख्तों के आलिंगन में मींचे जा सकने वाले

[459] अजीत कौर, खानाबदोश, पृ0 5

तनों के पास हम दोनों ने मिलकर की थी। आधी अधूरी दीवारों के उपर से छत गायब है। दीवारें अभी भी हैं। मुरमुराती हुई''[460]।

कुसुम अंसल ने अल्हड़ बचपन को बरसात का प्रतीक माना था। ''बचपन मुझे बरसात जैसा गलता था, अल्हड़, बहता हुआ स्वच्छ, जहाँ एक ओर बादलों की गरज से मन में भय कंपाता था दूसरी ओर छम-छम करती बारिश तले नहाने का अपना ही एक आकर्षण होता था''[461]। वह लेखन के क्षेत्र को कबड्डी के मैंदान का प्रतीक मानती हुई कहती है कि - ''लेखन का क्षेत्र, अगर ध्यान से देखें तो कबड्डी के मैंदान जैसा हो गया है जहां एक लेखक दूसरे लेखक की लेखकीय मौत के लिए भागता है, दबोचता है, झपटटे मरता है, प्रतीक्षा करता है कि उसकी सांसे कमजोर पड़ जाये और वह मृत घोषित कर दिया जाये[462]।''

मैत्रेयी पुष्पा ने जब अपनी पहली कविता प्रकाशित होने के लिए संपादक के पास भेजी, तब उन्होंने कविता में कोई कमी भी नहीं बताई तथा उसे छापा भी नहीं। वह संपादक को घमंडी का प्रतीक मान कर कहती है कि - ''मेरी कविता कुआंरी लड़की सी, चिर कुवांरी रह जाने की आशंका से भयभीत ..... क्या ये संपादक वर पक्ष के घमंडी लोग हैं, जो मन मानी करते हैं''[463]?

---

460 वहीं, पृ0 39

461 कुसुम अंसल, जो कहा नही गया, पृ0 17

462 वहीं, पृ0 212

463 मैत्रेयी पुष्पा, गुड़िया भीतर गुड़िया, पृ0 133

निष्कर्ष

सृष्टि के आदिम युग में मनुष्य ने जब नेत्रोन्मीलन किया होगा, तो बाह्य प्राकृतिक परिवेश के सम्पर्क में आने पर उसके मन में अनेक प्रतिक्रियाएँ एवं संवेदनाएँ जागृत हुई होंगी। अनेक अस्पष्ट तथा सामान्य अर्थ में निरर्थक ध्वनियों के माध्यम से उसने (मानव) अपनी प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने का प्रयास किया होगा। उसको भाषा नहीं कहा जा सकता। समाज संवेदनाओं और भावों को व्यक्त करने के लिए आदिम मानव ने जिन साधनों को अपनाया होगा, वे सभी साधन स्थूल रूप में भाषा कहे जा सकते हैं।

भाव शब्द के मूल में 'भू' धातु हैं जिसका अर्थ है - होना।' 'संवेदना' शब्द की 'सम्' पूर्वक 'विद्' धातु से व्युत्पन्न है। अतः अपनी भावना या संवेदना को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाले को ही 'व्यक्ति' कहा जाएगा। मानवेतर प्राणी भी अपनी संवेदनाओं को किसी भी प्रकार ध्वनियों के द्वारा प्रकट करते हैं, किन्तु सीमित तथा अविकसित होने से इसमें कोई उल्लेखनीय उन्नति नहीं होती। यही कारण है कि पशु-पक्षी आदिम युग में जैसा बोलते थे, आज भी वैसे ही बोलते है। इसके विपरीत मनुष्य की अभिव्यक्ति में चिन्तन, मनन और कल्पना के कारण निरन्तर विकास होता रहता है। अतः चिंतन, सृजनात्मकता तथा कलात्मकता के कारण मनुष्य अभिव्यक्ति विशिष्ट होती है और मानवेतर प्राणियों की तुलना में उदात्त भी होती है। मानवेतर प्राणियों की भाषा तात्कालिक, सपाट और

अभिध्यात्मक होती है, परन्तु मनुष्य की भाषा अभिधात्मकता के साथ-साथ लक्षणा व्यंजना से सम्पन्न बिम्बों, प्रतीकों एवं अलंकारों से समृद्ध होकर विचारों और भावों की विशेष संवाहिका हो जाती है।

लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं में अपने भावों की अभिव्यक्ति करने के लिए साहित्यिक भाषा की अपेक्षा क्षेत्रीय भाषा की बहुलता का प्रयोग किया है, जिस कारण उनके जीवन की सम्पूर्ण स्थितियाँ जीवन्त हो उठती है। आत्मकथा को छोड़कर साहित्य की किसी भी विधा में लेखक अपनी इच्छा से पात्रों के साथ-साथ भाषा को भी गढ़ सकता है, लेकिन आत्मकथा विधा में आत्मकथाकार की क्षेत्रीय भाषा अनायास ही प्रस्फुटित हो उठती है।

लेखिकाओं को परिवार समाज तथा साहित्य जगत् में जो कटु अनुभव हुए उनका, खुलासा उन्होंने अपनी आत्मकथाओं में बड़ी सूझ-बूझ से अधिकांशतः शिल्प भाषा का प्रयोग किया है। शिल्प का अर्थ अभिव्यक्ति है। लेखिका अपनी बात को दूसरों तक पहुंचाने में कितनी सक्षम सिद्ध होती है। जिससे किसी दूसरे की भावना को ठेस न पहुंचे और अपनी बात की दूसरों तक पहुंच पाए। लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथा में मर्यादा और शालीनता बनाये रखने के लिए शिल्प भाषा का प्रयोग किया है। कृष्णा अग्निहोत्री जी ने अपने परिवार की मर्यादा का ख्याल रखते हुए बचपन में रिश्तेदारों द्वारा किये गये यौन शोषण को अपनी भाषा में उजागर किया है।

अपनी आत्मकथाओं में लेखिकाओं ने ऐसे जीवन्त बिम्बों का प्रयोग हुआ है। जिससे समस्त घटना को पाठक अपने आस पास घटित होते हुए अनुभव करता है। रमणिका गुप्ता ने अपने ट्रेड यूनियन के जीवन में कई बार जीवन मृत्यु का खेल खेला। वह 'कूजूकूच' के दौरान अपनी संघर्ष गाथा को आत्मकथा में खूबसूरत बिम्बों के माध्यम से प्रस्तुत करती हैं - ''सिपाही बाहर चला गया। मैं दीवार में सटी बैठी रही। मेरे बाएं पक्ष पर जो खुली तरफ था लाठियां बरसती रहीं, न जाने कितनी लाठियां बरसीं। मैं गुम-सुम रही। वे लोग अब एक-एक कर अन्दर आते मुझे लाठी मारते, बाहर सिपाही को थमाते और चल देते''[464]। पंजाबी लेखिका अजीत कौर की पुत्री कैंडी की मृत्यु का बिम्ब चित्र पाठकों ने हृदय की द्रवीभूत कर देता है - ''अंदर से स्ट्रैचर पर वह आ रही थी। खामोश सोई हुई। मैंने उसका माथा चूमा, होंठ चूमें, होठों पर सफेद प्यास जीम हुई थी। आंखों के कोनों से आंसू अभी भी कनपटी पर सूखे हुए थे। खामोश आंखों के कमलों को गहरी वाली झालर ने ढंका हुआ था

लेखिकाओं ने अपनी आत्मकथाओं में अपने भावों मन की सुप्त भावनाओं, संघर्षों, भावावेगों आदि का प्रतीकों के माध्यम से चित्रण किया है। लेखिकाओं ने प्रतीक का प्रयोग प्रकृति के मानवीकरण के रूप में रूपक तथा उपमा के रूप में, चरित्र भाव तथा विचार विशेष के प्रतिनिधि के रूप में किया है।

---

[464] हादसे, रमणिका गुप्ता, पृ0 110